भ्रष्टाचार और वर्तमान सरकार

यह मनमोहन सिंह जी कार्यप्रणाली का दूसरा सत्र है। पहला सत्र उठा पटक और साम्यवादी करात की भेंट चढ़ गया था। किसी तरह पॉच वर्ष करात की ब्लैक मेल से ही निपटने में स्वाहा हो गये थे। आम चुनाव के बाद करात जी से मुक्ति मिली। अब मनमोहन सिंह जी सत्ता केन्द्रीत राजनीति को व्यवस्था केन्द्रीत राजनीति की दिशा देने की कोशिश कर रहे है, यह काम आसान नहीं। पग पग पर सत्ता केन्द्रीत राजनीति के खिलाड़ी व्यवस्था परिवर्तन में रोड़े अटका रहे है।

विपक्ष इस कार्य में सबसे आगे है जो स्वभाविक ही है। विपक्ष ने पिछले वर्ष मंहगाई को मुद्दा बनाकर आसमान सर पर उठा रखा था। सम्पूर्ण मीडिया भी मंहगाई को प्रमुख समस्या बनाने में व्यस्त था। रोज नये –नये आंकडे प्रकाशित हो रहे थे। कभी कभी तो ऐसा लगता था कि सरकार हिल रही है किन्तु सरकार शान्त रही। मंहगाई का ज्वार आया और चला गया। आम वस्तुओं के भाव न बढ़े थे न घट गये किन्तु मुद्रा स्फीति को महंगाई वृद्धि का असत्य प्रचार करके भावनात्मक उबाल की कोशिश समाप्त हुई। इसके बाद विपक्ष ने आतंकवाद को मुद्दा बनाया। आतंकवाद एक वास्तविक समस्या थी जो लगातार बढ़ती जा रही थी और सरकार उसे रोक नहीं पा रही थी क्योंकि आतंकवाद के मुद्दे पर सोनिया, दिग्विजय सिंह, राहुल गांधी, मनमोहन सिंह चिदम्बरम, के विरूद्ध सोच रखते थे। विपक्ष भी एक जुट नहीं हो सका। संघ परिवार का ही नाम आतंकवाद के साथ जुड़ जाने से इस गुव्वारे की हवा निकल गई और एक वास्तविक समस्या पर से ध्यान फिसलकर भ्रष्टाचार पर चला गया। अब भ्रष्टाचार विपक्ष का मुद्दा है। सम्पूर्ण विपक्ष और मिड़िया पूरी ताकत से भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाने की कोशिश में लगे है। संसद की कार्यवाही ठप है अखबार और टी 0बी0 दिन –रात प्रचार में लगें हुये है। सरकार ज्वार के ठंडा होने की प्रतिक्षा कर रही है।

सर्व विदित है कि राष्ट्रमंडल खेलों में अरबों का भ्रष्टाचार हुआ हैं। मीड़िया और विपक्ष ने पुरा जोर लगाया कि खेलों के बीच में ही कार्यवाही हो किन्तु प्रधानमंत्री कार्यवाही के पक्ष में नहीं थे। क्योंकि एक तो प्रधान मंत्री यह कार्यवाही स्वयं की पहल पर न करके सिस्टम से करने के पक्षधर थे और वे कार्यवाही खेल समापन के पूर्व होना उचित अवसर नहीं समक्षते थे। पूरा देश देख रहा है कि कार्यवाही हो रही है, कड़ाई से हो रही है, तरीके से हो रही है। यदि प्रधान मंत्री अपनी वाहवाही लूटना चाहते तो स्वयं पहल करते किन्तु उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा की अनदेखी करके व्यवस्था को मजबूत होने दिया।

राष्ट्रमंडल भ्रष्टाचार खेल खत्म होने के बाद टू जी स्पेक्ट्रम मुद्दा उठा। विपक्ष ने मुद्दा उठाया भी और गरमाया भी । विपक्ष ने अपनी सारी शक्ति लगा दी। पूरा विपक्ष एक जुट हुआ। अब तो प्रकाश करात भी बोल रहे है कि हम लोगों ने प्रधान मंत्री को पूर्व जानकारी दे दी थी। दुनियॉ जानती है कि यह भ्रष्टाचार प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के उस कार्य काल का है जब प्रकाश करात स्वयं सरकार के साथ थे। उस समय प्रकाश करात एन्ड कम्पनी ने जनता के बीच विरोध क्यों नहीं किया? उस समय आप इस लिये आगे बढ़कर विरोध नहीं कर सके कि आपकी कुछ वैसे ही मजबूरियॉ थी जैसी प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह जी की थी। आप प्रधान मंत्री को सूचना देकर पाक साफ हो गये और प्रधान मंत्री जी संचार मंत्रालय को भेजकर पाक साफ हो गये। वास्तव में प्रकाश करात और प्रधान मंत्री की स्थिति लगभग एक समान ही थी।

इस सारी स्थिति में न्यायपालिका ने हाथ डालकर एक गंभीर स्थिति पैदा कर दी। सच बात तो यह है कि टू जी स्पेक्ट्रम मामलें में इतना आगे बढ़कर न्यायपालिका ने अपनी सीमाओं का अतिक्रमण ही किया है। प्रधान मंत्री जी ने जिस दिन न्यायपालिका को अपनी सीमाओं का ध्यान कराया था उसी दिन स्पष्ट दिखने लगा

था कि न्याय पालिका प्रधान मंत्री की टिप्पणी का अवश्य ही बदला लेगी। टू जी स्पेंक्ट्रम के मामले ने कुछ ही दिनों में वह अवसर दे दिया जिसका लाभ उठाने में न्यायपालिका ने कोई कंजूसी नहीं की। न्यायालय ने भरपूर आक्रमण करते हुये प्रधानमत्री जी से ही शपथ पत्र मांग लिया। यह एक अभूतपूर्व कदम था। टू जी स्पेक्ट्रम मामले में प्रधान मंत्री किस सीमा तक दोषी है? उन्होंने सुब्रमन्यम स्वामी की याचिका पर कोई आदेश न देकर सम्बन्धित मंत्री को उत्तर के लियें भेंज दी और कुछ माह बाद सी0 बी0 आइ0 जॉच बिठा दी। कोर्ट का आरोप है कि प्रधान मंत्री ने न्यायालय द्वारा घोषित तीन माह की समय सीमा का उल्लंघन करके गलत किया है। प्रश्न उठता है कि न्यायालय द्वारा इस प्रकार की समय सीमा निर्धारित करना न्यायालय का न्यायिक आदेश था या प्रशासनिक? प्रश्न उठता है कि क्या न्यायालय का हर आदेश न्यायिक होता है? न्यायालय को उत्तर देना चाहिये कि उसके दागी न्यायाधीशों पर कार्यवाही की त्वरित प्रक्रिया और समय सीमा निर्धारित करने का काम कौन करेगा? जब तक भारत की विधायिका लोकतंत्र की सारी मर्यादाओं को ध्वस्त कर दी थी तब तक हम सबने न्यायपालिका के हर गलत सही आदेश का ऑख मूंदकर समर्थन किया। किन्तु अब जब हमारी विधायिका लोक तंत्र का पूरा पूरा सम्मान कर रही है तब न्यायपालिका अनावश्यक टकराव पैदा करे तो आक्रोश स्वाभाविक हैं। अपराधियों को पकड़कर पुलिस न्यायालय में प्रस्तुत करती है और अपराधी जल्दी ही छूटकर फिर से वैसा ही अपराध करता है। कई मामलों में तो कई बार की जमानत प्राप्त अपराधी छूटकर वहीं अपराध करता है, तो न्यायपालिका पर अंगुली क्यों नहीं उठनी चाहिये? आज के वातावरण में न्यायपालिका वैसी दूध की धुली नहीं कि अपराधी के बराबर छूटने में न्यायलय की कभी कोई भूल ही न हो। आज तो स्थिति ऐसी हो गई है कि भ्रष्टाचार और अर्क्रमण्यता के मामले में न्यायपालिका पर भी गंभीर आरोप लगने शुरू हो गये है। विचार करने की बात है कि न्यायलय में मुक्कदमों का अंबार लगा हुआ है। किन्तु न्यायपालिका सस्ती लोकप्रियता के चक्कर मे अपने न्यायाधीशों को एड्स के विरूद्ध प्रचार के लिये भेज रही है। मैंने सुना तो सहसा विश्वास ही नहीं हुआ। हम न्यायपालिका को ऐसी प्रति स्पर्धा से मुक्त देखना चाहते है।

सारा देश देख रहा है कि जो भी भ्रष्टाचार हो रहे है वे छिपने की अपेक्षा प्रकाश में आ रहे है और उन सब पर कार्यवाही हो रही है। यह अलग बात है कि वह कार्यवाही किसी व्यक्ति के आदेश से न होकर सिस्टम से हो रही है इससे कार्य वाही में विलंब हो रहा है किन्तु कार्य वाही करना या न करना किसी व्यक्ति पर निर्भर न रहकर किसी प्रक्रिया का अंग बन रहा है। मेरे विचार में तो सिस्टम का मजबूत होना हमारे लिये एक शुभ संकेत है जिसके लिये प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह बधाई के पात्र है। मैं तो स्पष्ट देख रहा हूॅ कि दो वर्ष पूर्व तक जो चुहे चुप –चाप बिलो में घुसे हुये थे वे भी अब ऐसे बड़े बड़े घोटालों का पर्दा फास होने पर खुले आम भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज लगा रहे है। ये लोग भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज लगाकर भ्रष्टाचार का विरोध नहीं कर रहे है। क्योंकि भ्रष्टाचार का विरोध करना उनका उद्देश्य नहीं है। उनका उद्देश्य है भ्रष्टाचार के नाम पर मनमोहन सिंह सरकार का विरोध करना। विपक्षी दलों का तो यह स्वभाविक कार्य है किन्तु अब तो भ्रष्टाचार विरोध की बहती गंगा में डुबकी लगाकर कई संत महात्मा भी राजनीति की वैतरणी पार करना चाहते है। मैंने तो सुना है कि स्वामी अग्निवेष सरीखे लोग भी इस नाव पर सवार हो रहे हैं। इस नाव का परिणाम क्या होगा यह भविष्य बतायेगा किन्तु ऐसी स्वार्थ पूर्ण मुहिम का अंतिम परिणाम घातक ही होंगा। न्यायपालिका के लिये भी संसद को मजबूती से आगे आना चाहिये। सारी असफलताओं का दोष अन्य इकाइयों पर डालकर स्वयं पाक साफ दिखना और भीतर– भीतर मजे करने का खेल रूकना चाहिये। उच्च न्यायलय या सर्वोच्च न्यायलय का कोई मुकदमा तीन वर्ष से ज्यादा लम्बित हो तो हर मामले की समीक्षा संसदीय समिति करे। सर्वोच्च या उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के खिलाफ भ्रष्टाचार की जॉच भी जे0 पी0 सी0 से कराई जाय। न्यायपालिका का सम्मान सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य था। उनका अधिकार नहीं। हमारे कर्तव्य को न्याय पालिका ने अपना अधिकार मानना शुरू करके भूल की हैं। आज आवश्यकता यह है कि भ्रष्टाचार के विरूद्ध किसी व्यवस्था का विकास कर रहे राजनेताओं के हाथ मजबूत किये जायें। प्रदेश स्तर पर तो

नितिश कुमार नरेन्द्रमोदी लगातार सशक्त हो रहे हैं किन्तु केन्द्रीय स्तर पर भी मनमोहन सिंह के हाथ मजबूत करने की जरूरत हैं। यदि राजनैतिक मजबूरी या तकनीकी कारणों से कोई कमी भी होती हो तब भी हमें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे हमारे प्रधानमंत्री के हाथ कमजोर हो। लोकतत्र की सभी इकाइयों को मिलजुल कर भ्रष्टाचार के विरूद्ध युद्ध की घोषणा करनी चाहिये। जिसमे हमारी न्यायपालिका कहीं न कहीं पिछड़ रही है। यह समय हमारे लोकतंत्र की इकाइयों के आपसी टकराव का न होकर सामन्जस्य का है। और मुझे विश्वास है कि यह पहल अवश्य होगी।

.

प्रश्नोत्तर

श्री गणेश देव आर्य। कृतज्ञता नगर बीदर कर्नाटक

1, प्रश्न–ज्ञान तत्व के दो अंक पढ, पाया। ऐसा लगा कि पूर्व के अंक न पढ़ पाना एक बड़ी भूल हुई है। इन दो अंको के भी कुछ संदर्भ दो दो बार पढ़े, भाषा बहुत संतुलित और स्पष्ट है। अग्निवेष जी के दुहरे चरित्र सुनीलम् जी के समाजवाद का पोस्टमार्टम, संघ परिवार द्वारा हिन्दू शब्द का पेटेन्टीकरण, न्यायपालिका के दायित्व और सीमाऍं, राष्ट्रपति से वेतन संबंधी चर्चा आदि विषयों पर मेरी पूर्ण सहमति है। कई बातें तो मुझे बिल्कुल मौलिक दिखीं। किन्तु कुछ ऐसी बाते है जिन पर मैं आपसे संवाद आवश्यक समझता हूॅ क्योंकि मैं भी बचपन से ही आर्य समाज के साथ जुड़ा रहा हूॅ। बिना ठीक से समझे चुप हो जाना मेरा स्वभाव नहीं है। आशा है कि आप कुछ विषयों को और स्पष्ट करेंगे।

1, आपने लिखा कि संघ और बाबा रामदेव व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर सत्ता परिवर्तन के प्रयास में लग गये है। मैं आपसे सहमत नहीं हूॅ। संघ के विषय में तो मैं ज्यादा कुछ नहीं कह रहा किन्तु रामदेव जी के विषय में आपकी घारणा गलत है। सच्चाई यह है कि बाबा रामदेव जी की छः सौ पच्चीस जिलों में छः सौ पचीस आदर्श ग्राम बनाने की योजना है, जो गांव पूरी तरह आत्म निर्भर तथा नशामुक्त होंगे। साथ ही पूरे विश्व में योग और आयुर्वेद के माध्यम से देश समुदाय निरपेक्ष मानव मात्र कल्याण उनका लक्ष्य हैं । रामदेव जी शिक्षा में भी व्यापक परिवर्तन हेतु ज्ञान विज्ञान युक्त वैदिक गुरूकुल शिक्षा की योजना बना रहे हैं।

वैसे भी रामदेव जी ने भ्रष्टाचार के विरूद्ध मजबूत मुहिम छेड रखी है । ऐसे प्रयत्नो को सत्ता संघर्ष की मुहिम से जोडना ठीक नहीं । मेरी तो सलाह है कि आप रामदेव जी की मुहिम के साथ जुडकर काम करें।

जहॉ तक संघ का संबंध है तो मेरा माना है कि संघ ने जन्मना जाति ब्यवस्था को स्वीकार करके गंभीर गलती की हैं। संध की इस गलती का समाज व्यवस्था पर गंभीर खराब असर पडा है।

(2) आपने इन्डिपेन्डेन्स ट्रीटी के अस्तित्व पर सवाल खड़ा किया है। इस संबंध में आप राजीव दीक्षित जी से चर्चा करें। बाबा रामदेव जी भी सन् बयालीस से सैंतालीस तक की स्वतंत्रता संबंधी चर्चाओं की जो बातें बतातें हैं और जो लाखों पृष्ठों की है वे बातें भी तो इन्डिपेन्डेन्स ट्रीटी से ही संबंधित है।

3 आपने रामबहादुर राय जी के प्रश्न के उत्तर में महिलाओं के विषय में जो लिखा हैं। उससे मेरे मन में प्रश्न उठा कि क्या महिलाओं को सम्पत्ति में अधिकार मिला? क्या उन्हें यह अधिकार नहीं मिलना चाहिये? क्या बच्चे के नाम के साथ मॉ का नाम नहीं जुड़ना चाहिये? पहले महिला को समान अधिकार देना शुरू करें तो विशेष अधिकार की बात बंद हो जायगी।

(4) कन्या भ्रूण हत्या संबंधी आपके विचार मनन योग्य है किन्तु क्या कन्या भ्रूण को सुरक्षित करना आज की आवश्यकता नहीं है? मेरे विचार में नारी की महत्ता पुरूषों से अधिक है। इस सत्य की अनदेखी करना ठीक नहीं होगा। वैसे बालक भ्रूण हत्या भी उचित नहीं। वह भी अमानवीय हत्या ही मानने की आवश्यकता हैं।

(5) यह सत्य है कि नेहरू जी ने हमारे देश की राजभाषा सहित कई मुद्दों को उलझा कर रख दिया। अभी लार्ड माउन्टबेटन की लड़की की लिखी एक अंग्रेजी पुस्तक बाजार में आई है जिसके अनुसार उसके पिता ने उसकी मॉ को नेहरू जी के लिये खुला छोड़ दिया था जिसके प्रभाव से नेहरू जी की नीतियॉ प्रभावित होती रहीं। कश्मीर संबंधी नेहरू जी का विचलन भी उन्हीं अवैध संबंधों का परिणाम था।

(6) विदेशों से धन लाने संबंधी चर्चा में आपने बाबा रामदेव जी को कानून अनभिज्ञ कहा जो ठीक नहीं। विदेशों से धन वापस लाना किसी भी रूप में असम्भव कार्य नहीं हैं। सक्रियता और दृढ इच्छा शक्ति की आवश्यकता है।

(7) श्री नरेन्द्र सिंह जी ने संघ की प्रशंसा की है। मैं उससे सहमत नहीं। संघ ने मुस्लिम आतंकवाद का विरोध करके समाज का जितना भला किया है उससे कई गुना ज्यादा धार्मिक रूढिवाद को प्रश्रय देकर समाज का नुकसान किया है।

आपके लेखन और चिंतन से मैं प्रभावित हूॅ। मैं आपसे जानना चाहता हूॅ कि (1) स्वामी दयानन्द के कौन से विचार आपको अव्यावहारिक लगते है (2) वैदिक समाजवाद और लोक स्वराज्य एक ही है या कुछ अंतर है (3) स्वामी रामदेव जी लोक स्वराज्य में कैसे सहयोगी हो सकते है?

(4) आप परम आनंद की प्राप्ति के लिये समाधि की दिशा में क्यों नहीं बढ़ रहे?

उत्तर – आपने एक साथ बड़ी संख्या में गंभीर प्रश्न उठाये है जिनके पूरे उत्तर एक ज्ञानतत्व बन सकते है किन्तु आपने बहुत ईमानदार समीक्षा की है और बहुत अधिक चिन्तन मनन करके प्रश्न उठाये हैं इसलिये विस्तृत उत्तर देना आवश्यक भी है और उचित भी। विशेष कर तब और भी जब आपसे संवाद मेरे ज्ञान विस्तार में भी सहायक हो सकता है। अतः मैं किसी भी रूप में कंजूसी करने के पक्ष में नही हूॅ।

(1) किसी व्यक्ति अथवा संगठन के क्रिया कलापों में छिपी इच्छाओं का ऑकलन तीन प्रकार की गतिविधियों से संभव है।

(क) उस व्यक्ति या संगठन की गतिविधियों का समाज सुधार तक सीमित होना।

(ख) गतिविधियों को समाज सुधार से आगे सत्ता की समीक्षा सलाह और सहयोग की दिशा में बढ़ना।

(ग) गतिविधियों का सत्ता की आलोचना और विरोध की दिशा मे बढ़ना।

संघ ने अपनी सारी गतिविधियॉ समाज सुधार से ही शुरू की थी। स्वतंत्रता के पूर्व संघ की गतिविधियों मे राज्य की समीक्षा या सलाह भी अपवाद स्वरूप ही होती थी, आलोचना का तो प्रश्न ही नहीं था। स्वतंत्रता के बाद एकाएक संघ सत्ता संघर्ष में कूद पड़ा। संघ की पच्चास वर्षो की सामाजिक कार्यो की पूॅजी उसके पतन को अब तक खींचती जा रही है। अन्यथा अब तक तो उसका पूरा पतन हो गया होता। आप जानते होंगे कि संघ ने प्रारम्भ की राजनीति में तीन वैचारिक मुद्दे उठाये थे।

(1) समान नागरिक संहिता (2) धर्म परिवर्तन पर रोक (3) अल्प संख्यक बहु संख्यक की अवधारणा की समाप्ति। आज संघ तीनों मुद्दों को छोड़कर मंदिर मंस्जिद जैसे भावनात्मक मुद्दों पर सारी शक्ति लगा रहा है। रामदेव जी ने भी प्रारम्भ समाज सुधार से किया। योग, आयुर्वेद, शराव बंदी आदि की दिशा में वे सफलता पूर्वक आगे बढ़े। वे लोकप्रियता के सर्वोच्च शिखर पर है। उन्हें सरकार की समीक्षा या सलाह तक सीमित रहना था। किन्तु वे सरकार की आलोचना और विरोध की सीमा तक चले गये। स्पष्ट है कि लोक प्रियता के चरम ने उनमें राजनैतिक महत्वाकाक्षाऍ पैदा कर दी है। रामदेव जी भी भ्रष्टाचार उन्मूलन का कोई मार्ग न बताकर वर्तमान भ्रष्टाचार का विरोध मात्र कर रहे है। वे स्विस बैंकों से धन वापस लाने को मुद्दा बना रहे है। वे पहले कोई ऐसा मार्ग बतावे, जिससे भारत में भ्रष्ट धन का उत्पादन घटे और भविष्य में ऐसा धन विदेश जाना ही बन्द हो जावे। विदेशों में जमा भ्रष्ट धन एक भावनात्मक मुद्दा है जिसके सहारे सत्ता की ओर बढ़ा जा सकता है किन्तु समाधान की दिशा में नहीं बढ़ा जा सकता। मैं भी बाबा रामदेव जी का बहुत प्रशंसक रहा हूॅ और उनकी सामाजिक गतिविधियों का प्रशंसक आज भी हूॅ किन्तु मैं उनकी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओ का प्रशंसक नहीं।

यदि शरीर में फोड़ा हो गया है तो उसका आपरेशन उचित है किन्तु यदि लागातार फोड़े निकलते हो तो आपरेशन के अलावा भी रक्त शुद्धि के प्रयत्न करने होंगे। समाज में यदि एक दो प्रतिशत भ्रष्टाचार व्याप्त हो तब तो छापे या दण्ड का भय कारगर हो सकते है किन्तु यदि नब्बे प्रतिशत भ्रष्टाचार हो तो भ्रष्टाचार के उत्पादन को रोकने का उपाय करना होगा।

बाबा रामदेव जी ने चुनाव पूर्व आहवान किया था कि दलो की सीमाऍ तोड़कर अच्छे लोगों को चुनावों में वोट देकर जिताया जावे। उसके अच्छे परिणाम आये। स्वतंत्रता के बाद पहली बार राजनीति में अच्छे लोग मजबूत होने शुरू हुऐ है। अब बाबा ने भाषा बदल ली है और कहना शुरू कर दिया है कि भारत स्वाभिमान मंच ही अच्छे लोगों की पहचान है। बताइये कि मैं क्या कहूॅ। बाबा व्यवस्था परिवर्तन कि जगह सत्ता परिवर्तन का खेल खेलना शुरू कर दिये।

कल्पना करिये कि पिकनिक के लिये सौ सौ रूपया इकठ्ठा करके व्यवस्था के लिये अ को दे दिया गया और बाद में पता चला कि अ ने कुछ घपला कर दिया। दूसरे वर्ष वह राशि ब को दी गई तो ब ने अ की अपेक्षा कुछ ज्यादा गोलमाल की। तीसरे वर्ष स को दिया तो वह अ और ब से भी आगे निकल गया। अब बजरंग मुनि का सुझाव है कि धन संग्रह करके व्यवस्था की प्रणाली का निजीकरण कर दो। सब लोग अपने अपने घर से खाना लावे और खावे। अब अ ब स कह रहे है कि इस प्रणाली से असमानता होगी। कोई बड़ा आदमी पूड़ी ले आयेगा तो कोई भात। पुरानी ही प्रणाली ठीक है। रामदेव जी भी उसी प्रणाली का समर्थन करते हुए कह रहे है कि इस बार यह पैसा हमारी टीम को देकर देखों। भारत स्वाभिमान मंच यह काम ईमानदारी से करेगा। साठ वर्षो से हम अब तक की प्रणाली से धोखा खा रहे है। ऐसे ही तो ईमानदार आश्वासन संघ परिवार ने दिये थे। हम लोक स्वराज्य प्रणाली विकसित करना चाहते है। रामदेव जी लोक स्वराज्य प्रणाली को नकारकर पुरानी प्रणाली का समर्थन कर रहे है तो हमें स्वीकार नहीं क्योंकि कई बार ऐसे विश्वास, विश्वासघात में बदल चुके हैं।

जब तक रामदेव जी व्यवस्था परिवर्तन का मार्ग बता रहे थे तक तक उनकी नीयत पर संदेह नहीं था किन्तु जब से वे व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर सत्ता परिवर्तन की राह बतानी शुरू किये है तब से संदेह होना शुरू हुआ है। अब त्याग की तपोमूर्ति रामदेव जी को अपनी वाई श्रेणी की सुरक्षा ब्यवस्था अपर्याप्त दिखने लगी है। वे जेड श्रेणी की सुरक्षा की मांग करने लगे है । विश्वास नहीं होता कि हमारे देश का सन्यासी इतना खतरा महसूस करेगा। खतरा सन्यासी को नहीं है खतरा है सन्यासी के पास एकत्रित हो रही धन संपदा और राजनैतिक शक्ति को। यदि धन और सत्ता केन्द्रित होगी तो खतरा स्वाभाविक है।

अब भी समय है कि रामदेव जी वैदिक समाजवाद को समझे और केन्द्रीय करण की जगह अकेन्द्रीय करण का मार्ग दिखाना शुरू करें। अब हम किसी व्यक्ति या संगठन को सत्ता देने का खतरा नहीं उठाना चाहते। चाहे वह व्यक्ति आर्य सन्यासी ही क्यों न हो।

संघ ने जन्मना जाति व्यवस्था का समर्थन कभी नहीं किया है। समाज में व्याप्त जन्मना जाति व्यवस्था अच्छी है या बुरी इस विषय को संघ उठाता ही नहीं। यह विषय जिस तरह आर्य समाज की प्राथमिकताओं में है उस तरह संघ की नहीं क्योंकि आर्य समाज आज भी सामाजिक परिवर्तन के सोच तक ही सीमित है किन्तु संघ अब राजनैतिक परिवर्तन की लाइन पर चल रहा है जो अब और आगे जाकर सत्ता परिवर्तन की ओर बढ़ चुका है।

(2) इन्डिपेन्डेन्स ट्रीटी एक समझौते कें रूप में बताया जाता है जो एक अप्रकाशित दस्तावेज भी हो सकता है और काल्पनिक भी। मुझे विश्वास है कि इस विषय में भ्रातिंयॉ फैलाई जा रही है। राजीव जी से मेरी चर्चा होती ही रहती है। मैं कभी और प्रयास करता किन्तु दुर्भाग्य वश वे नहीं रहे। वैसे राजीव जी को स्वयं ही यह भेद खोल देना चाहिये था।

(3) महिलाओं के संबंध में मेरे विचार आपसे भिन्न है। मैं परिवार प्रणाली को संवैधानिक मान्यता दिये जाने का पक्षधर हूॅ। मैं व्यक्ति और समाज के बीच परिवार, गॉव जिला, प्रदेश, और देश प्रणाली का पक्षधर हूॅ। मैं व्यक्ति और समाज के बीच जाति, वर्ण, धर्म और राष्ट्र प्रणाली के विरूद्ध हूॅ। जाति, वर्ण, धर्म प्राचीन समय में रूढ़ न होकर व्यवस्था के सहायक थे। ये कर्मानुसार बदलते रहते थे। धर्म तो व्यक्ति का व्यक्तिगत था ही। इस लिये मेरा विचार है कि परिवार, गॉव, जिला, प्रदेश को संवैधानिक मान्यता देकर जाति धर्म की संवैधानिक मान्यता को समाप्त कर दें। जाति, वर्ण, धर्म, समाज में रह तो रह सकते है। किन्तु इन्हें पृथक से कोई संवैधानिक भूमिका नहीं होनी चाहिये। व्यक्ति एक इकाई हो। भारत एक सौ बीस करोड़ का देश हो न कि जातियों लिंगों या धर्मो का संघ।

महिला को भी व्यक्ति के रूप में व्यक्तिगत अधिकार होगें परिवार में उसे पारिवारिक अधिकार होगें। प्राचीन समय में परिवार के प्रत्येक सदस्य की परिवार में समान भूमिका थी। धीरे–धीरे पुरूष प्रधान हो गई क्योंकि आम तौर पर परिवार के मुखिया के रूप में पुरूष ही प्रमुख होता था। अब नई सवैधानिक व्यवस्था में परिवार की परिभाषा को बदल दे। जो इस तरह हो ''संयुक्त सम्पत्ति तथा संयुक्त उत्तरदायित्व के आधार पर एक साथ रहने हेतु सहमत व्यक्तियों का समुह'' । परिवार में रहते हुए सम्पूर्ण सम्पत्ति सामूहिक परिवार की होगी। और परिवार छोड़ते समय उस सदस्य का भाग उसे दे दें जो वह नये परिवार में शामिल करेगा। महिलाओं को भी सम्पत्ति में समान अधिकार हो जायगा। किन्तु सबके समान अधिकार में ही उनका भी अधिकार होगा। महिला कोई अलग होने से उसे न कोई विशेष अधिकार होंगे न कम। परिवारिक मामलों में महिला पुरूष सब मिलकर अपना मुखिया चुने और अपने अपने कर्तव्यों का तथा अधिकारों का विभाजन करे। यह उनकी स्वतंत्रता होगी। मैं समझता हूॅ की कई विसंगतियॉ दूर हो जायेगी।

(4) आपने चौथे प्रश्न में कन्या भ्रूण की असुरक्षा पूछा है। विचारणीय यह है कि क्या आज कन्या भ्रूण इतना असुरक्षित हो गया है? पुरूष स्त्री आबादी में महिला अनुपात कुल मिलाकर डेढ़ प्रतिशत ही तो कम है। इतनी बेमतलब की हाय तौबा क्यों?

आज शराफत संकट में है धुर्त अपराधी तत्वों का मनोबल बढ़ रहा है और शरीफ लोगों का गिर रहा हैं। भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। शराफत की सुरक्षा के उपाय खोजे जाने चाहिये। सरकारे इस दिशा में कुछ करने की अपेक्षा हमें कन्या भ्रूण हत्या जैसे कम महत्व की असुरक्षा जैसे मामलों में उलझाना चाहती है। भोले भाले बाबा भी राजनेताओं के चका चौंधी प्रचार में फंस जाते है। हमारा एक ही लक्ष्य होना चाहिये ''शराफत की सुरक्षा'' उसका एक ही मार्ग है समाज सशक्तिकरण राज्य कमजोरी करण। मार्ग का तात्कालिक कार्य है लोक स्वराज्य पर बल देना। महिला सशक्तिकरण शब्द समाज को वर्गो में बाटकर राज्य के अधिकाधिक हस्तक्षेप का मार्ग प्रशस्त करने की भूल से अधिक कुछ नहीं।

मैंने पिछले कई अंकों में लिखा है कि दो वर्ष पूर्व के आम चुनावों ने व्यवस्था परिवर्तन की शुरूआत कर दी है। केन्द्र में मनमोहन सिंह का मजबूत होना, बिहार में नीतिश कुमार का इस तरह एक पक्षीय जीतना, गुजरात में नरेन्द्र मोदी की जीत नई व्यवस्था के संकेत है। लालू रामविलास जैसे महाबलियों का धूल चटना एक शुभ संकेत मानकर सारे भारत को स्वागत करना चाहिये। रामदेव जी अब शराफत की सुरक्षा की दिशा में प्रारम्भ प्राकृतिक पहल की मदद करे, और मार्ग दर्शन करें न कि नारद मोह में पड़े। समाज ने मार्ग निकालना शुरू कर दिया है। मेरे विचार में कन्या भ्रूण हत्या अभी अपरिपक्व समस्या है। यह समाज की प्राथमिक समस्या में मानने योग्य नहीं है।

(5) मैंने न तो वह पुस्तक पढ़ी है न ही मैं पढ़ने की प्राथमिकता समझता हूँ इतिहास की घटनाएँ मार्गदर्शक संकेत तक ही उपयोगी होती है, लम्बे समय तक चिपकने से लाभ नहीं। लार्ड़ माउन्टवेटन की पत्नी नेहरू जी की नीतियों को प्रभावित करती थी या नेहरू जी उसके माध्यम से लार्ड़ को प्रभावित करते थे इसकी खोज इतिहासकारों को करने दीजिये। हम आप सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं के विश्लेषण तक ही सीमित रहे तो अच्छा है। नेहरू जी स्वयं अंतर्राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थे या दूसरे से प्रभावित होकर कश्मीर समस्या को यू0 एन0 ओ0 में ले गये इस अटकल में मैं अपना समय और शक्ति नहीं लगाना चाहता। एक भूल हो गई तो अब साठ वर्ष बाद उसकी रट लगाये रखना उचित नहीं।

(6) विदेशों से धन लाने का कार्य हमारी प्राथमिकताओं में पहले क्रम में होना ठीक नहीं। पहले क्रम में होना चाहिये लोक स्वराज्य दूसरे क्रम में अपराध नियंत्रण की गारंटी तीसरे क्रम में आर्थिक असमानता में कमी श्रम मूल्य वृद्धि और समान नागरिक संहिता, चौथी प्राथमिकता, भ्रष्टाचार नियंत्रण उसके आगे की प्राथमिकताओं में कही विदेशी धन लाना भी जुड़ सकता है। रामदेव जी लोक स्वराज्य की अवधारणा के विल्कुल विपरित राज्य केन्द्रित प्रणाली के पक्ष में है जो ठीक नहीं

(7) मैं आपसे सहमत हूँ कि संघ ने विचार और आस्था का संतुलन खराब किया। जिस तरह शारीरिक स्वास्थ के लियें वात, पित्त ,कफ आवश्यक होते हुए भी संतुलन आवश्यक है और किसी एक का घटना बढ़ना बिमारी को आमंत्रण है उसी तरह समाज के ठीक संचालन के लिये व्यक्ति में विचार और आस्था के संतुलन की जरूरत है। संघ ने विचार पक्ष की अनदेखी करके आस्था पक्ष को अनावश्यक मजबूत किया। अब रामदेव जी भी आस्था पक्ष को ही सबल करने की भूल कर रहे है। विचार पक्ष को कमजोर करने से सत्ता तो शायद मिल जायॅ जो मुझे तो असंभव दिखती है, किन्तु समाज को अपूरणीय क्षति होगी।

(2) श्री मती अंजलि सिंहा, महिला अधिकार कार्यकर्ता

विचार– प्रसिद्ध लेखिका अरून्धती राय की मॉ मेरी राय एक सुपरिचित शिक्षा विद हैं। उन्होंने अपने भाइयों से सम्पत्ति अधिकार का मुकदमा पचीस वर्षो तक लड़ कर अन्ततः अब विजय प्राप्त कर ही ली। वे केरल निवासी है। अनेक न्यायालयों से हारते जीतते अन्ततः सुप्रीम कोर्ट से मुकदमा जीतकर उन्हाने समाज को राह दिखाई है कि सत्य के लिये संघर्ष करते रहने से विजय अवश्य होगी । अरून्धती जी की मॉ मेरी राय इस संघर्ष के लिये बधाई की पात्र है।

उत्तर– श्री मति राय इसलिये भी बधाई की पात्र है कि उन्होंने अरून्धती राय सरीखी संघर्षशील कन्या को जन्म दिया। अरून्धती जी से भूल हो गई। अपनों से विवाद करने का गुण उन्हें माता –पिता से ही प्राप्त हुआ हैं। अच्छा होता यदि वे अपने माता –पिता के परिवार से ही मुकदमा लड़कर जीतने का इतिहास बनाने में सक्रिय हो गई होती तो आज राष्ट्रीय स्तर पर अनावश्यक विवाद पैदा करने का उनके पास समय ही नहीं बचता। साथ ही उनकी माता मेरी राय को भी एक सबक मिल जाता।

मेरी राय में पच्चीस वर्षो तक अपने भाइयों से मुकदमा लड़कर जो केश जीत लिया उसके लिये मेरी राय को बधाई दी जाय या नहीं यह विचारणीय है। मेरी राय ने अपने ही भाईयों से पच्चीस वर्षो तक कुछ सम्पंति के लिये कानूनी युद्ध किया और जीत ही गई तो इसमें मुझे तो कुछ बधाई देने लायक नहीं दिखा। माता –पिता की सम्पत्ति हिस्से के लिये इतना लम्बा संघर्ष करने वाली महिला के कार्य में कौन सा आदर्श छिपा है जिसके लिये उसे बधाई दी जायॅ। यदि वे मजबूर होती तो कुछ दया की पात्र थी। किन्तु आर्थिक स्तर पर मजबूत होते हुए इतनी लम्बी मुकदमें बाजी और वह भी अपने ही भाईयो के खिलाफ होना आपकी नजर में आदर्श हो सकता है किन्तु मेरी नजर में तो कलंक ही है। इस लड़ाई में कौन सा सामाजिक उद्देश्य छिपा है? समाज को अनावश्यक वर्ग संघर्षो में उलझाकर उन्हें मुकदमें बाजी का मार्ग दिखाने वाली मेरी नजर में आदर्श नहीं। मेरी राय के माता– पिता ऐसी संतान को स्वर्ग से आशिर्वाद देते होंगे या पश्चाताप करते होगें यह आपके सोचने का विषय है मेरे सोचने का नहीं क्योंकि अपने परिवार में मुकदमें बाजी मेरी प्राथमिकताओं में शामिल नहीं और ऐसी मुकदमें बाजी में हार हो या जीत किन्तु मैं तो उसे अपनें जीवन की हार के रूप में ही मानता हूॅ।

आपने एक सामाजिक कार्यकर्ता का लेबल लगा रखा है। आज अनेक विदेशी या सरकारी धन प्राप्त समाज तोड़क व्यक्ति और संस्थाऍ सामाजिक कार्य कर्ता का लेबल और बोर्ड लगाकर घूम रहे है। ऐसे कार्यकर्ताओं को विदेशी या सरकारी उपक्रम सामाजिक संस्था का सर्टिफिकेट भी देते है और सामान या पारितोषिक भी। मैं नहीं कह सकता कि आप किस श्रेणी की सामाजिक कार्यकर्ता है? क्यांकि मैं व्यक्तिगत रूप से आपको नहीं जानता। यदि संवाद बढ़ेगा तब जानकारी होगी।

(3) श्री रामकृष्ण पौराणिक, सागर म0 प्र0

ज्ञान तत्व दो सौ दस प्राप्त हुआ। मैं हर ज्ञान तत्व को अवश्य पढ़ता हूॅ कभी कभी तो दो बार पढ़ता हूॅ। ज्ञान तत्व में आपकी लेखनी की कला न होकर आपके अनुभव और चिंतन का सार होता है। पढ़ने पर लगता है कि आप अपने मन का यथार्थ व्यक्त कर रहे है । कुछ बातों पर असहमति भी रहती है। किन्तु विरोध की स्थिति नहीं बनती। असहमति पर मेरा आपसे संवाद भी होता ही है। कई बार मैं सहमत होता हूॅ तो कई बार आप सहमत हो जाते है।

भारत में अपेक्षाकृत कम असरदार उपक्रम सैनिक शाही या किसी भी जाति या धर्म या संप्रदाय का चोला धारण करने वाले व्यक्तियों का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रयास जान बूझकर या अनजाने भी चल रहा है और अज्ञानी चापलूस अदूरदर्शी तथा अर्थ लोलुप दृष्टिहीन मीड़िया भी इसके प्रचार में लग गया है। यह सच होते हुये भी महात्मा गांधी द्वारा देश विदेश में उनके द्वारा भी निः स्वार्थ भाव से अहिंसांत्मक संघर्ष की सत्य आधारित जो भूमिका उनके जीवन काल में मर चली उसे शासकीय इंगिंत पर अर्थ पोषण के माध्यम से सर्वोदय समाज व सर्वसेवा संघ के स्वार्थ पोषक पाखंड से बहुत क्षति हुई। लोग प्रायः गांधी जी को भूल गये। आपने अपने प्रयास से स्वामी दयानन्द द्वारा कल्पित तथा गांधी जी द्वारा स्पष्ट घोषित तथा जन नायक जयप्रकाश जी द्वारा समर्थित लोक स्वराज्य अवधारणा को देश भर में एक जीवन चेतना के साथ उभारा है। खेद यही है कि लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास कई खंडों में बिखरे है आशा है आपका ज्ञान तत्व इन पृथक –पृथक अहं कि बाधा से मुक्ति पाकर देश की अस्सी प्रतिशत गरीब अज्ञान अहंकार में दृष्टि भ्रमित जनता को तेजस्वी संगठन के रूप मं कोई मंच प्राप्त होगा जो और अधिक दृढ़ता से इस आंदोलन को भारत में और भारत के बाहर शोषित पीड़ित देशों तक अवश्य फैला सकेगा। युग पुरूष गांधी जी इस सत्य एंव अहिंसा आदोलन के प्रेरणा स्त्रोत बने रहेंगे और इसे नामधारी गांधी से कोई बाधा ना हो सकेगा।

अभी अभी आर. एस. एस. में कुछ सुधारवादी गतिविधियॉ बढ़ी थी। उन्हें हिन्दू संगठन कमजोर होता भी दिख रहा था उसके लिये उन्होंने एक आंदोलन की भूमिका रखी जिसे संघ के पूर्व सर संघ चालक के0 एस0 सुदर्शन ने अपनें अविवेक पूर्ण अदूरदर्शी भाषण द्वारा श्री मति सोनिया गांधी पर निरर्थक कीचड़ उछालकर ठंडा कर दिया और स्वयं भी ठंडा हो गये। यह एक कुदरती घटना है जो देश को और हिन्दु समाज को भी गलत दिशा में भटकने से रोकने में आकस्मिक और अकल्पित रूप से सहायक है।

आपने रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद विवाद पर जो सटीक समर्थन उच्च न्यायालय का किया है वह साधुवाद के योग्य है। भारत के सभी विचार वान एवं दूरदर्शी हितैषी नागरिक इस फैसले का स्वागत कर रहे है। लड़ने वाले सुप्रीम कोर्ट का चक्कर लगावेंगे, क्योंकि यही उनका पेशा है। इसमे हिन्दू या मुसलमानों के अहित चिंतक ही लड़ेंगे जिन्हें राष्ट्रहित का बोध नहीं है या स्वार्थ प्रेरित है। आपने ज्ञानतत्व प्रसार हेतु अभियान चलाया है मैं उसका पूर्ण समर्थक हूॅ उसके लिये कार्य भी करना चाहता हूॅ पर 83 वर्ष की आयु और स्वास्थ्य तथा आर्थिक परावलम्वन के कारण मुझे इस दिशा में कुछ भी न करने का अत्यधिक मानसिक संताप है । आपने सी0 डी0 भेजी है मेरे पास उसका उपयोग करने का साधन नहीं है पर मैं चाहता हूॅ कि उसे योग्य व्यक्ति को सौप सकूं मेरी नजर सागर में कुछ ऐसे व्यक्ति है जिन तक मैं पॅहुच सकूं तो इसमें कुछ योगदान कर सके।

उत्तर – यह सच है कि ज्ञान तत्व में मेरी लेखनी की कला न होकर विचार है। संवाद पश्चात् मैं संशोधन के लिये भी तैयार रहता हूॅ । डेढ़ वर्ष पूर्व तक मैं इस विचार का था कि अब राजनैतिक पतन को रोकना असंभव है। चुनाव के ठीक पहले मैंने एक लेख लिख कर यह बात स्पष्ट भी की थी। चुनाव के परिणाम आते ही मुझे महसूस हुआ कि भारत की जनता ने अप्रत्याशित रूप से राजनैतिक पतन की दिशा परिवर्तन की शुरूआत कर दी है। चुनाव परिणाम की समीक्षा के बाद मुझे एक दिन नींद नहीं आई। और मैंने तत्काल अगले अंक में यह लिखा कि मेरा चुनाव पूर्व का लेख खारिज कर दिया जॉय। क्योंकि पिछले 63 वर्षो में पहली बार चुनाव परिणामों ने परिवर्तन की आशा जगाई है मैंने अत्यन्त गंभीर शब्दों में अपना मत परिवर्तन स्वीकार किया था।

अब मेरे विचार में दो मार्ग है 1– दीर्घ कालिक 2– तात्कालिक। दीर्घ कालिक मार्ग है समाज में लोक स्वराज्य की भूमिका पैदा करना। वर्तमान राजनैतिक दलों को लोक स्वराज्य की दिशा देना अथवा लोक स्वराज्य को आधार बनाकर बनने वाले नये दलों को सशक्त करना जिस तरह डॉ प्रभू अथवा रणबीर शर्मा जी कर

रहे है। तात्कालिक कार्य है सम्पूर्ण राजनैतिक वातावरण में ईमानदार व्यक्तियों को उभारना तथा भ्रष्ट, घूर्त, चालाक, छवि वालों को कमजोर करना। आप देख रहे होंगे कि ज्ञान तत्व दीर्घकालिक प्रयत्नों में भी सक्रिय है और तात्कालिक में भी। हम निरंतर मनमोहन सिंह, शांता कुमार, बाबुलाल मरांडी जैसे व्यक्तियों को उभारकर लालू, मुलायम, मायावती, अजीत जोगी, सिब्बू सोरेन, ममता बनर्जी, प्रकाश करात, रामविलास पासवान जैसे व्यक्तियों को कमजोर करने में सक्रिय हैं। मेरे विचार में यदि कोई दल लोक स्वराज्य की स्पष्ट अवधारणा घोषित करे तभी दल का समर्थन किया जाय अन्यथा दलगत विचार घारा से उपर उठकर ईमानदार और भ्रष्ट के बीच स्पष्ट विभाजन रेखा खींच दी जॉय। रामदेव जी के स्वाभिमान मंच को भी दलगत भावना से उपर व्यक्तिगत आधार पर आकलित करना चाहिये क्योंकि उनके संभावित दल में भी व्यवस्था परिवर्तन की कोई स्पष्ट दिशा न हो कर सुशासन के सुनहरे सपनों का विश्वास ही छिपा दिखता है।

आपने मुझसे अथवा ज्ञान तत्व से नेतृत्व की अपेक्षा की हैं क्योंकि ''पृथक पृथक अहम की बाधा'' शब्द का आशय यही है। मैं आपको स्पष्ट कर दूं कि मैं मुनि हूॅ। मैं गृहस्थ पूरा करके वानप्रस्थ की ओर गया हूॅ। मैं उनमें नहीं जो गेरूआ वस्त्र पहनकर गृहस्थ के प्रति कदम बढ़ाउ। मैं चाहता तो एक ऐसा संगठन खड़ा कर सकता था। किन्तु मेरे बाद उसका भविष्य नहीं था क्योंकि कोई सिस्टम खड़ा नहीं होता और देश उसी तरह छला जाता जैसे गांधी और जयप्रकाश के बाद छला गया। मैं चाहता हूॅ कि लोक स्वराज्य के रूप में एक नई व्यवस्था उभरे। कही कोई अहम नहीं हैं। कहीं कोई पृथकता नहीं है दीर्घकालिक और तात्कालिक विषयों पर संवाद को पृथक पृथक विचारों में देखना ठीक नहीं है। मैं कोई नई व्यवस्था देना नहीं चाहता न ही बनाना चाहता हूॅ मैं तो नई व्यवस्था बनते हुयें देखना चाहता हूॅ चाहे वह मेरे जीवन काल में हो या उसके बाद। सौभाग्य से मैं ऐसे परिवर्तन के लक्षण स्पष्ट देख रहा हूॅ।

आपने शैलेन्द्र जैन जी की प्रशंसा की है मैं उन्हें ज्ञान तत्व तथा अन्य साहित्य भेजूंगा।

मैं अपने पाठकों को स्पष्ट कर दूं कि रामकृष्ण जी पौराणीक सागर म0प्र0 और राम कृष्ण जी पौराणीक उज्जैन म0 प्र0 एक ही व्यक्ति न होकर पृथक –पृथक है दोनों की चिन्तन धारा और चिंताऍ तो लगभग एक समान है। किन्तु स्वास्थ के मामले मं उज्जैन वाले पौराणीक जी इस उम्र में भी यात्रा कर लेते है। सागर वाले पौराणीक जी का सदस्यता क्रमांक 2808 तथा उज्जैन वाले पौराणिक जी का 2633 है।

(4) श्री नरेन्द्र सिंह जी,बनबोई उ0प्र0

मुनि जी आपका पत्र मिला। पत्र में आपने यथेष्ट उत्तर देने का प्रयास किया है। लेकिन मैं इससे पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं हूॅ। क्योंकि आपने हिन्दुत्व पर गर्व करने की बात कह कर विषय को कुछ अस्पष्ट सा कर दिया है। मेरे विचार से हिन्दुत्व पर गर्व करना आपका व्यक्गित विषय है इसकी बार बार सार्वजनिक घोषणा की मुझे तो कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती। मूलतः मेरा प्रश्न नीति स्पष्ट करने के लिये था, निष्ठा से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था और जब व्यक्ति नीति में निष्ठा का मिश्रण करके स्वयं को निष्पक्ष सिद्ध करने का प्रयास करता है तो वह निश्चित रूप से दिशाहीन सिद्ध होता है।

दुनियॉ के लगभग सभी व्यक्ति धार्मिक आस्था के किसी न किसी विचार को मानने वाले है, और सभी, कभी न कभी इसी तरह की घोषणा करतें रहते है। व्यक्तियां द्वारा ऐसा करने से भला समाज को आज तक क्या प्राप्त हुआ है। जीवन के सृजन के साथ जोड़कर देखी जाने वाली आस्था की इन विचार धाराओं के अंतर्गत लोगों ने जीवन की नैसर्गिक स्वतंत्रता की प्राप्ति का क्या कभी कोई प्रयास किया है? और यदि हॉ तो कब और

कैसे? क्योंकि मेरी जानकारी में तो इस आधारभूत तथ्य पर कभी कोई चिन्तन नहीं हुआ ..... हॉ इस क्रम में हिन्दूत्व जैसा उन्मुक्त चिन्तन भी भयंकर प्रतिक्रिया वादी बन गया और संघ ने ऐसा करने में हिन्दुत्व को बल दिया है। संघ के इस दृष्टिकोण का विरोध करने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिये।

इसके विपरीत मैं हिन्दूत्व की विचारधार को इस विषय में अधिक समर्थक मानता हूॅ कि इसने आलोचना, समालोचना, समीक्षा एवं परिवर्तन जैसे कारकों को अपने चरित्र में स्थान दिया है। लेकिन फिर भी यह कोई प्राकृतिक व्यवस्था नहीं है । दुनिया की अन्य ऐसी विचारधाराओं के विषय में तो मैं ऐसी किसी समीक्षा के पक्ष में ही नहीं हूॅ। क्योंकि उनकें चरित्र में तो प्रतिक्रिया एवॅ प्रतिस्पर्धा के अतिरिक्त न तो कुछ है और न वे अपने इस रास्ते को छोड़ना चाहते है। इस स्थिति में यह तथ्य विचारणीय हो जाता है कि समाज में इस्लाम, ईसाइयत, एवं साम्यवाद की प्रतिक्रिया वादी धारणाओं को किस प्रकार कमजोर किया जाय। लेकिन यह कार्य करने वाले व्यक्तियों को अपने निष्पक्षता के विचार को भी पूर्व निभाना होगा और यह उन्हीं की पवित्र जिम्मेदारी होगीं समाज तो इसमे आक्षेप लगाने के अतिरिक्त कोई सहयोग देने से रहा।

उत्तर–आपका प्रश्न ज्ञान तत्व दो सौ नौ के पृष्ठ उन्हत्तर पर छपा है जिसमें आपने मेरे द्वारा संघ की आलोचना का विरोध किया है । उसके उत्तर में मैंने हिन्दूत्व पर गर्व की बात कहीं है, न कि कहीं स्वतंत्र रूप में। हिन्दूत्व पर गर्व करना मेरा व्यक्तिगत विषय नहीं किन्तु वह संघ वाले हिन्दुत्व पर गर्व न होकर संघ से विपरीत मौलिक हिन्दुत्व के प्रति है। मेरी निष्ठा हिन्दुत्व की नीतियों के प्रति है, पहचान के प्रति नहीं। जब हिन्दूत्व की मौलिक नीतियॉ ही मेरी नीतियॉ है तो मैं स्वयं को निष्पक्ष सिद्ध कर रहा हूॅ यह आरोप स्वयं में ही गलत है।

आपने लिखा कि हिन्दुत्व प्रतिक्रिया वादी बन गया। मेरे विचार में यह बात गलत है। यदि हिन्दूत्व प्रतिक्रिया वादी बन जाता तो आज भारत में संघ परिवार शिखर पर होता। संघ परिवार का निरंतर पतन प्रमाणित करता है कि हिन्दू क्षणिक भ्रमित होते हुये भी सम्हल गया है। अतः चिंता की कोई बात नहीं।

हिन्दुत्व की विचार धारा के विपरीत ईसाइयत, इस्लाम, साम्यवाद, तथा संघ परिवार निरंतर सक्रिय है। चारों शुद्ध सामाजिक संस्थाऍ न होकर प्रच्छन्न राजनैतिक विचार भी रखती हैं । मैं इन चारों की आपसी समीक्षा में तो पूरी तरह निष्पक्ष रहता हूॅ। किन्तु हिन्दुत्व के पक्ष में झुक जाता हूॅ। मुझे ये नीति बहुत पसंद है। आप इसका जैसा भी अर्थ समझे। पच्चीस दिसम्बर को भेंट होगी तब प्रत्यक्ष चर्चा होगी।

(5) श्री कृष्ण कुमार जी खन्ना, मेरठ, उ0प्र0

आप पूरी इमानदारी और तन्मयता से लोक स्वराज्य के लिये सक्रिय है। मैं आपसे सहमत हूॅ कि विचार विमर्श के बाद निष्कर्ष और निष्कर्ष के बाद क्रिया होनी चाहिये। हमने पच्चीस वर्ष तक विचार विमर्ष किया और तब निष्कर्ष निकला कि राष्ट्रपति, जज और न्यायधीशों की वेतन वृद्धी गलत है। हमने राष्ट्रपति से मिलकर विरोध की शुरूआत भी की थी। उसके बाद लोक स्वराज्य मंच, लोक स्वराज्य अभियान, लोक स्वराज्य संघ के नाम बदल –बदल कर बैठकों का दौर चल रहा है किन्तु कोई क्रिया शुरू नहीं हो रही। अब तो सांसदों ने भी मनमाना वेतन बढ़ा लिया है किन्तु हमारे संघ ने कुछ नहीं किया।

आपने अंक दो सौ नौ के पृष्ट छत्तीस पर लिखा है कि ''हम विचार मंथन तक ही सीमित रहेंगे और कोई प्रयोग कोई आंदोलन कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगे। लोक स्वराज्य के लिये हस्तक्षेप, आंदोलन, सविनय अवज्ञा जैसा कार्यक्रम आवश्यक है। आप बताइये कि दोनो का तालमेल कैसे बिठाया जाय?

उत्तर– आपके मन की पीड़ा, स्पष्टता और सक्रियता को मैं भी समझता हूॅ किन्तु मजबूर हूॅ। मेरठ बैठक में आपने मेरी मजबूरी देखी होगी। लोक स्वराज्य के लिये काम कर रही टीम के कुछ सदस्यों की लफ्फाजी देखकर आपने भी नाराजगी व्यक्त की थी। सिर्फ बैठक करके लाखों का बजट बनाना, प्रस्ताव पारित करना और फिर नया बजट बनाने के अतिरिक्त हुआ क्या है? आपके मन की पीड़ा मेरे समक्ष व्यक्त न होकर लोक स्वराज्य संघ के समक्ष व्यक्त होनी चाहिये। मैं तो लोक स्वराज्य संघ का सदस्य नहीं हूॅ।

अभी लोक स्वराज्य संघ के अध्यक्ष दुर्गा प्रसाद जी आर्य ने लोक स्वराज्य संघ के महा सचिव ईश्वर दयाल जी राजगीर वालों का एक पत्र टिप्पणी के लिये भेजा है ईश्वर दयाल जी ने आपत्ति की है कि ज्ञान यज्ञ परिवार ने विचार मंथन तक सीमित न रहकर नई समाज रचना के कार्य में अपनी सक्रियता कैसे बढ़ा दी। उन्होंने पूछा है कि बिना उनसे पूछे ज्ञान यज्ञ परिवार सक्रिय कैसे हो सकता है?

खन्ना जी चाहते है कि ज्ञान यज्ञ परिवार आंदोलन में सक्रिय हो और लोक स्वराज्य अभियान के सचिव चाहते है कि ज्ञान यज्ञ परिवार विचार मंथन से आगे सक्रिय न हो। खन्ना जी ने सुझाव दिया है और ईश्वर दयाल जी ने बहुत आक्रोश व्यक्त किया है। ईश्वर दयाल जी ज्ञान यज्ञ परिवार के सदस्य न थे न हैं। वे प्रारम्भ से ही लोक स्वराज्य संघ के सदस्य रहे जिसका मैं कभी सदस्य नहीं रहा। वे वर्षो से मेरे विरूद्ध आक्रोश व्यक्त करते रहे है जिसका मैंने न पहले कभी उत्तर दिया है न अब देना चाहता हूॅ क्योंकि यह लोक स्वराज्य संघ का आंतरिक मामला है, संगठनात्मक मामला है न वैचारिक है न जनहित का। खन्ना जी का प्रश्न वैचारिक भी है और जनहित से जुड़ा हुआ भी। खन्ना जी आश्वस्त रहें। कृष्ण ने प्रतिज्ञा की थी कि कभी हथियार नहीं उठाउॅगा किन्तु जब अति आवश्यक हुआ तो प्रतिज्ञा भंग की। ज्ञान यज्ञ परिवार ने विचार मंथन तक सीमित रहने की प्रतिज्ञा नहीं की है। सिर्फ यही है कि सामान्यतः ज्ञान यज्ञ परिवार विचार मंथन तक सीमित रहेगा तथा नई समाज रचना का कार्य करेगा किन्तु यदि लोक स्वराज्य संघ, सर्वोदय, खन्ना जी अथवा कोई अन्य संगठन वेतन वृद्धि विरोध सहित लोक स्वराज्य के लिये संघर्ष की दिशा में आगे आता है तो ज्ञान यज्ञ परिवार उसमें शमिल हो जाएगा और यदि कहीं मेरी भूमिका की भी आवश्यकता हुई तो मैं भी पीछे नहीं रहूॅगा। मैंने तो यहॉ तक कहा है कि बाबा रामदेव सत्ता संघर्ष से हटकर व्यवस्था परिवर्तन का मार्ग पकड़ ले तो हम तो साथ है ही। रामदेव जी लोक नियुक्त तंत्र को लोक नियंत्रित तंत्र में बदलने को क्यों मुद्दा नहीं बनाते। भ्रष्टाचार मुक्त शासन व्यवस्था तो तात्कालिक प्रश्न मात्र है दीर्घ कालिक प्रश्न तो लोक तंत्र के सम्बन्धों का पुनः निर्धारण ही है जो वर्तमान में तंत्र की ओर झुका हुआ है और जिसे भविष्य में लोक की और झुकना चाहिये।

मै खन्ना जी से सहमत हूॅ। यदि कोई गंभीर योजना बनती है और मेरे या ज्ञान यज्ञ परिवार के सहयोग की आवश्यकता हो तो समर्थन में पाइयेगा।

(6) दीना नाथ वर्मा, रायपुर, छ0ग0

आपका ज्ञान तत्व अंक दो सौ दस मिला। आधोपांत पढ़कर ही रखा। प्रत्येक अंक की प्रतीक्षा उत्सुकता पूर्वक करता हूॅ। रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद और न्यायलय का निर्णय शीर्षक से आपके विचार की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है संगठन पर सर्वश्रेष्ठ चिन्तन आपकी विलक्षण सोम प्रतिभा का कमाल पढ़कर गद्गद् हो गया। इस्लाम और संघ पर जो अनुपम सटीक व्याख्या की गई है वह प्रत्येक जागरूक पाठक का हृदय झकझोर कर रखने वाली है। हिन्दुत्व की अभिनव परिभाषा अत्यन्त तर्क संगत है। यह सब आपके निष्पक्ष सोच का ही परिणाम है। मेरा मन तो आपके इस लेख पर लेख लिखने का होता है, परन्तु शब्द नहीं है और हृदय भावों से लबालब भरा है।

(7) श्री पंथ राम वर्मा, मटंग, दुर्ग, छ0ग0

प्रश्न – ज्ञान तत्व की प्रतिक्षा रहती है। एक अंक का भी न भी आना अज्ञान तत्व के मजबूत होने का भय पैदा करता है। रामानुजगंज विकाश खंड के गांवों में ग्राम सभा की सक्रिता पैदा करने का प्रयोग आप कर रहे है। कहा तक गांडी आगे बढ़ी है। अगर एक स्थान में प्रयोग सफल हो तो सभी जगह संभव हो सकता है। मेरी राय में वर्तमान ग्राम सभा मृत हो गया है शव परिक्षण योग्य भी नहीं है न ही उसका कोई निशान है। अत एव शासन द्वारा पोस्टमार्टम करके उसको दफन कर देना चाहिये। दवा फायदा न करे उससे नुकसान संभव है। आम जनता द्वारा निर्वाचित सरपंच मंच के उपर ग्राम सभा थोपना पंचायत का निरादर है। अगर पंचायत में ग्राम सभा की मंजूरी आवश्यक है तो फिर जनपद और जिला पंचायत में जनपद क्षेंत्र सभा जिला पंचायत क्षेत्र सभा क्यों नहीं है। यह एक अहम् संवाद है। राजनैतिक पक्षों के लोग इस ग्राम सभा का नाजायज फायदा उठाते है। गांवों में दल बंदी बदली है सरपंचों की गिनती पक्षों में करते है। अतः सर्व सम्मत चुनाव ही विकल्प है अभी सरपंच संघ के लोग मानदेय बढ़ाने की गुहार शासन से लगाते है पर विधान सभा लोक सभा के सदस्य अपना वेतन स्वयं बढ़ा देते है जिसे अगर वे ठीक मानते है तो पंचायत को भी अपना मानदेय बढ़ाने का अधिकार क्यों न दिया जाय?

इसलिये गांधी विनोबा ने ग्राम स्वराज्य में पूर्ण अधिकार पंचायतो को देने तथा न्याय पंचायते भी चलाने कहा था विनोबा जी ने तो ग्राम के झगड़े गांवों में निपटाने तथा उसकी अपील भी न हो यहा तक कहा था पुरानी व्यवस्था वैसे ही थी।

उत्तर – रामानुजगंज विकाश खंड के एक सौ तेरह तथा बलरामपुर के सत्रह गााव मिलाकर ग्राम सभा सशक्ति करण अभियान प्रारम्भ हुआ है। अभियान की प्रारंभिक प्रगति संतोष प्रद है। अन्य संकेत पच्चीस दिसम्बर से एक जनवरी तक के सम्मेलन के स्पष्ट होंगे। आप सब लोग अवश्य आइये।

वर्तमान ग्राम सभा मृत प्राय हुई नहीं बल्कि की गई हैं किन्तु इसे शव मानकर दफनाना ठीक नहीं क्योंकि ग्राम सभा में ही नई समाज रचना के बीज छिपे है। ग्राम सभा सशक्ति करण से ही जाति धर्म भाषा क्षेत्रीयता लिंग आदि के भेद से मुक्त समाज की कल्पना संभव हैं ग्राम पंचायत से तो प्रशासनिक प्रदूषण शुरू हो जाता है। हम ग्राम सभा को पंचायत का स्वरूप न मानकर ग्राम समाज का रूप मान रहे है।

ग्राम सभा का ग्राम पंचायतों के दैनिक क्रिया कलापों में कोई हस्तक्षेप नहीं है। ग्राम सभा तो ग्रांम पंचायतों के क्रिया कलापों की इस समीक्षा तक ही सीमित है। ये सरपंच पंच से उपर न होकर सांकेतिक वरीयता प्राप्त ही है। विजेता सरपंच को अंतिम सर्वोच्च मानने की अपेक्षा ग्राम सभा को सशक्त करना सर्व सम्मति का ज्यादा अच्छा विकल्प बन सकता है। जिस तरह संसद अपना वेतन मनमाना बढ़ा लेती है उसका विरोध होना चाहिये न कि पंच सरपंचों की मनमानी का समर्थन। बिना ग्राम सभा की सहमति के पंचायत प्रतिनिधि अपना वेतन भत्ता न बढ़ा सके। ऐसा प्रावधान होना चाहिये। विनोबा जी ने गांव शव्द कहा था ग्राम पंचायत नहीं गांव का अर्थ ग्राम सभा से था। ग्राम स्वराज्य का अर्थ गांवों को निर्णय करने की स्वतंत्रता से था न कि पंचायत की स्वतंत्रता से। मेरा मत है कि ग्राम सभा को नई समाज रचना के साथ जोड़कर प्रयत्न करना चाहिये जो रामानुजगंज से शुरू है।

कार्यालयीन प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न – बिहार चुनावों में नितिश कुमार की भारी जीत को आप किस तरह देखते है? बंगाल मे वुध्ददेव भट्टाचार्य अच्छे व्यक्ति होते हुए भी पिछड़, क्यों रहें है।

उत्तर – बिहार चुनाव में नितिश कुमार की जीत में कुछ भी अप्रत्याशित नहीं है। यदि लालू, रामबिलास को एक भी सीट नहीं मिलती तब भी कुछ अचम्भा नहीं होता। आप विचार करिये कि जिस तरह लालू, मुलायम ने सांसदों की वेतन वृद्धि के मामले में निम्नतम स्तर का आचरण किया था वह कभी भी क्षमा योग्य है? हम लालू को जोकर और मुलायम को दादा तो मानते थे किन्तु सांसद वेतन वृद्धि मामले में इन्होंने जोकरई और दादागिरी से अलग हटकर संसदीय प्रणाली के दुरूपयोग का नंगा नांच किया वह असहनीय था। वेतन वृद्धि के नाटक में अन्य लोग तो लंगोट पहनने तक ही नंगे थे किन्तु ये दोनों तो लंगोट भी खोल बैठे। इतना होने के बाद भी कुछ क्षेत्रों में लालू का जीत जाना ही अप्रत्याशित कहा जाना चाहिये। विहार चुनाव दो तरफा रहा है इस चुनाव में नीतिश प्रणाली और लालू प्रणाली के बीच सीधा टकराव था। इसमें नितिश कुमार का व्यक्तित्व ही कसौटी पर नहीं था बल्कि एक नई प्रणाली कसौटी पर थी जो नरेन्द मोदी प्रणाली से ठीक विपरीत थी। इस प्रणाली की भी परीक्षा हुई दूसरी ओर लालू, रामविलास जैसे घृणित लोग थे। परिणाम स्पष्ट दिखे जो लालू, रामविलास प्रणाली के सम्पूर्ण पतन की शुरूआत है।

बंगाल में बुद्धदेव जी पार्टी लाइन को उतना ठेगा नहीं दिखा सके जितना नितिश, नरेन्द्र मोदी। परिणाम हुआ कि बंगाल की पहचान बुद्धदेव लाइन न होकर साम्यवाद बनी रही। यदि वे साम्यवाद में दस प्रतिशत और हिम्मत कर लेते तो तस्वीर बदल जाती। ममता बनर्जी और बुद्धदेव भट्टाचार्य में कोई तुलना नहीं है किन्तु बुद्धदेव भट्टाचार्य समय के साथ निर्णय नहीं ले पाये । यदि वे और ज्यादा खुलकर सोमनाथ चटर्जी को साथ दे देते तो देश के लिये भी अच्छा होता और उनके लिये भी। अब तो चूक हो गई और परिणाम यही होना है। बंगाल की जनता एक वार तो साम्यवाद को उखाड़ेगी ही भले ही ममता बनर्जी को ही क्यों न ढ़ोना पड़े। प्रकाश करात से पिंड़ छुड़ाने में बेचारे बुद्धदेव बलि चढ़ रहे है और ममता आगे आ रही है इसमे दोष बुद्धदेंव जी का ही है। किसी और का नहीं।

12. धर्मपाल आर्य, कमला नगर, दिल्ली –500

13 राम किशोर साह, दुर्ग, छग0– 200

14 ओम प्रकाश, नालंदा, विहार 50

15 सिया राम साहु, दुर्ग, छ0ग0 50

16 हंस राज सुद, कांगडा 100

17 हीरालाल श्री माली 50

18 रामजी लाल, अजमेर 100

19 हरिशंकर सेन, छत्तरपुर, म.प्र. 50